"चमत्कार"
Of फिक्का बोलना

1. बाबा बोलना किआ कहीऐ। जैसे राम-नाम रव रहीऐ। (870)

अर्थ:- हे भाई ! (जगत में रहते हुए) कैसे बोल बोलें, जिनकी इनायत से परमात्मा के नाम के साथ तवज्जो टिकी रहे?।

संत मिलै किछ सुनीऐ कहीऐ। मिलै असंत मसट कर रहीऐ।

अर्थ:- अगर कोई भला मनुष्य मिल जाए तो (उसकी शिक्षा) सुननी चाहिए, और (जीवन के राह की गुंझलें) पूछनी चाहिए। पर अगर कोई बुरा आदमी मिल जाए, तो वहाँ चुप रहना ही ठीक है।

संतन सिउ बोले उपकारी । मूरख सिउ बोले झख मारी ।

अर्थः- (क्योंकि) भलों के साथ बात करने से कोई भलाई की बात निकलेगी, और मूर्ख से बात करने पर बेकार की झख मारने वाली बात होगी ।

बोलत-बोलत बढह बिकारा । बिन बोले किआ करह बीचारा ।

अर्थः- (फिर) ज्यों-ज्यों (मूर्ख के साथ) बातें करेंगे (उसके कुसंग में) विकार ही विकार बढ़ते हैं ; (पर इसका मतलब ये नहीं कि किसी के भी साथ उठना-बैठना नहीं चाहिए) । अगर भले मनुष्यों के साथ भी नहीं बोलेंगे, (भाव, अगर भलों के पास भी नहीं बैठेंगे) तो विचार की बातें कैसे कर सकते हैं ?

कह कबीर छूछा घट बोले । भरिआ होइ सु कबहु न डोले ।

अर्थः- हे कबीर ! सच बात ये है कि (जैसे) खाली घड़ा बोलता है, अगर वह (पानी के साथ) भरा हुआ हो तो वह कभी छलकता नहीं (इसी तरह बहुत फालतू बातें गुणहीन मनुष्य ही करता है । जो गुणवान है वह अडोल रहता है । सो, जगत में कोई ऐसा उद्यम करें, जिससे गुण ग्रहण कर सकें, और ये गुण मिल सकते हैं भले लोगों के पास से ही) ।

2. बाबा बोलीऐ पत होइ । ऊतम से दर ऊतम कहीअह - नीच करम बह रोइ ।

अर्थः- हे भाई ! वे बोल बोलने चाहिए (जिससे प्रभु की हजूरी में) इज्जत मिले । वही मनुष्य (असल में) अच्छे हैं, जो परमेश्वर की हजूरी में अच्छे कहे जाते हैं, मंदकर्मी बंदे चिन्ता में झुरते ही हैं ।

जित बोलिऐ पत पाईऐ - सो बोलिआ परवाण । फिका बोल विगुचणा - सुण मूरख मन अजाण । (15)

अर्थः- बोल वही बोले हुए बढ़िया हैं जिस बोल के बोलने से (प्रभु की हजूरी में) आदर मिलता है । हे मूर्ख अन्जान मन ! सुन ! फीके बोल (नाम रस विहीन) बोलने से दुख मिलता है (भाव, यदि सारी उम्र सिर्फ निरी-कोरी बातें ही करते रहे, जो प्रभु की याद से खाली हों तो दूखी ही रहते हैं) प्रभु की महिमा के बिना और सब बातें व्यर्थ हैं ।

a. फेर कि अगै रखीऐ - जित दिसै दरबार । मुहौ कि बोलण बोलीऐ - जित सुण धरे पिआर । (2)

अर्थः- अगर सारी दातें वह बख्श रहा है तो- हम कौन सी भेटा उस अकाल-पुरख के आगे रखें, जिस सदके हमें उसका दरबार दिख जाए ? हम मुँह से कौन से वचन कहें कि (भाव, कैसी अरदास करें कि) जिसे सुन के वह हरि (हमें) प्यार करने लगे ।

b. किआ सेव कमावउ - किआ कह रीझावउ - बिध कित पावउ दरसारे । (738)

अर्थः- हे प्रभु ! मैं तेरी कौन सी सेवा करूं ? मैं क्या कह के तुझे प्रसन्न करूँ ? मैं किस तरह तेरे दीदार हासिल करूँ ?

c. भगता का बोलिआ परवाण है - दरगह पवै थाइ । (522)

अर्थः- बंदगी करने वाले मनुष्यों का वचन मानने के लायक होता है, प्रभु की दरगाह में (भी) स्वीकार होता है ।

d. भगत मुखे ते बोलदे - से वचन होवदे । प्रगट पहारा जापदा - सभ लोक सुणदे । (306)

अर्थः- भक्तजन जो वचन मुँह से बोलते हैं वह सही होते हैं । (भक्त) सारे जगत में मशहूर हो जाते हैं, उनकी शोभा सारे लोग सुनते हैं ।

3.नानक फिके बोलिऐ - तन-मन फिका होइ । फिको-फिका सदीऐ - फिके फिकी सोइ । फिका दरगह सटीऐ - मुह थुका फिके पाइ । फिका मूरख आखीऐ - पाणा लहै सजाइ ।(473)

अर्थः- हे नानक ! जो मनुष्य रूखे वचन बोलता रहे, तो उसका तन और मन दोनों रूखे हो जाते हैं (भाव, मनुष्य के अंदर से प्रेम खत्म हो जाता है) । रूखा बोलने वाला लोगों में रूखा ही मशहूर हो जाता है और लोग भी उसे रूखे वचन से सदा याद करते हैं । रूखा (भाव, प्रेम से वंचित) मनुष्य (प्रभु की) दरगाह में रद्द हो जाता है और उसके मुंह पर थूकें ही पड़ती हैं (भाव, धिक्कारें ही पड़ती हैं) । (प्रेम हीन) रूखे मनुष्य को मूर्ख कहना चाहिए, प्रेम से वंचित को जूतियों की मार पड़ती है (भाव, हर जगह उसकी सदा बेइज्जती होती है) ।

a. इक फिका न गालाइ - सभना मै सचा धणी । हिआउ न कैही ठाह - माणक सभ अमोलवे । (1384)

अर्थः- एक भी फीका वचन ना बोल (क्योंकि) सबमें सच्चा मालिक (बस रहा है), किसी का भी दिल ना दुखा (क्योंकि) यह सारे (जीव) अमूल्य मोती हैं ।

b. सुभ बचन बोल गुन अमोल । (1229)

अर्थः- परमात्मा के अमूल्य गुण (सभी वचनों से) शुभ वचन हैं : इनका उच्चारण किया कर ।

4. मिठ बोलड़ा जी - हरि सजण सुआमी मोरा । हउ समल थकी जी - ओह कदे न बोले कउरा ।

अर्थः- हे भाई ! मेरा मालिक-प्रभु मीठे बोलों वाला प्यारा मित्र है । मैं याद कर-कर के थक गई हूँ (कि उसका कभी कोई कठोर कड़वा बोल याद आ जाए, पर) वह कभी भी कड़वे बोल नहीं बोलता ।

कउड़ा बोल न जाने पूरन भगवाने - अउगण को न चितारे ।
पतित पावन हरि बिरद सदाए - इक तिल नही भने घाले ।

अर्थः- हे भाई ! वह सारे गुणों से भरपूर भगवान खरवे (कड़वे) बोलना जानता ही नहीं, (क्योंकि वह हमारा) कोई भी अवगुण याद ही नहीं रखता । वह विकारियों को पवित्र करने वाला है; ये उसका मूल कदीमी स्वभाव बताया जाता है, (और वह किसी की भी) की हुई मेहनत-कमाई को तिल भर भी व्यर्थ नहीं जाने देता ।

घट-घट वासी सरब निवासी - नेरै ही ते नेरा । नानक दास सदा सरणागत - हरि अम्रित सजण मेरा । (784)

अर्थः- हे भाई ! मेरा सज्जन हरेक शरीर में बसता है, सब जीवों में बसता है, हरेक जीव के अत्यंत नजदीक बसता है दास नानक सदा उस की शरण पड़ा रहता है । हे भाई ! मेरा सज्जन प्रभु आत्मिक जीवन देने वाला है ।

a. खूब तेरी पगरी - मीठे तेरे बोल । (727)

अर्थः- हे यार ! सुंदर सी तेरी पगड़ी है (भाव, तेरा स्वरूप सुंदर है) और प्यारे तेरे वचन हैं !

b. अम्रित बचन सतिगुर की बाणी - जो बोलै सो मुख अम्रित पावै । (494)

अर्थः- हे भाई ! सतिगुरु की वाणी आत्मिक जीवन देने वाले वचन हैं, जो मनुष्य ये वाणी उचारता है, वह मनुष्य अपने मुंह में आत्मिक जीवन देने वाला जल डालता है ।

c. बाणी उचरह साध जन - अमिउ चलह झरणे । (320)

अर्थः- (सत्संग में) गुरमुख, महिमा की वाणी उच्चारते हैं वहाँ अमृत के, जैसे, फुव्वारे चल पड़ते हैं ।

d. माथे त्रिकुटी - द्रिसट करूर । बोलै कउड़ा - जिहवा की फूड़ । सदा भूखी - पिर जानै दूर । (394)

अर्थः- हे भाई ! उस माया-स्त्री के माथे पे त्रिकुटी (पड़ी रहती) है, उसकी निगाह गुस्से से भरी रहती है वह (सदा) कड़वा बोलती है, जीभ भी कटु है (सारे जगत के आत्मिक जीवन को हड़प करके भी) वह भूखी की भूखी रहती है (जगत में आ रहे सब जीवों को हड़पने को तैयार रहती है) वह (माया-स्त्री) प्रभु-पति को कहीं दूर बसता समझती है (प्रभु-पति की परवाह ही नहीं करती) ।

5. आइआ सुणिआ बिदर दे - बोलै दुरजोधन होइ रुखा ।

अर्थः- यह सुनकर कि भगवान कृष्ण ने बीदर के घर पर भोजन किया था और वहीं रुके थे, दुर्योधन ने व्यंग्यात्मक टिप्पणी की ।

घर असाडे छड के – गो ले दे घर जाह के सुखा ।

अर्थः- अपने भव्य महलों को छोड़कर नौकर के घर में आपको कितना सुख और आराम मिला ?

भीखम-द्रोणा-करण - तज सभा सीगार - वडे मानुखा ।

अर्थः- आपने भीखम, दोहना और करण को भी त्याग दिया, जो सभी दरबारों में सुशोभित महान पुरुष माने जाते हैं ।

झुंगी जाइ वलाइओन - सभना दे जीअ अंदर धुखा ।

अर्थः- हम सभी को यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि आप एक झोपड़ी में रहते थे ।

हस बोले भगवान जी - सुणिहो राजा होइ सनमुखा ।

अर्थः- तब मुस्कुराते हुए भगवान कृष्ण ने राजा को आगे आने और ध्यानपूर्वक सुनने के लिए कहा ।

तेरे भाउ न दिसई - मेरे नाही अपदा दुखा ।

अर्थः- मैं आपमें कोई प्रेम और भक्ति नहीं देखता (और इसीलिए मैं आपके पास नहीं आया) ।

भाउ जिवेहा बिदर दे - होरी दे चित चाउ न चुखा ।

अर्थः- मैं देखता हूं कि किसी के भी हृदय में बीदर के हृदय में मौजूद प्रेम जैसा एक अंश भी नहीं है ।

गोबिंद भाउ भगत दा भुखा । (भाई गुरदास वर्णन वार 10 पौडी 7)

अर्थः- भगवान को प्रेमपूर्ण भक्ति की आवश्यकता है, और कुछ नहीं ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"